

**श्री नवाब सिंह चौहान :** कुछ ग्रहबारों में निकलना है कि मथुरा की रिफाइनरी को वहाँ से हटा कर इटावा पहुँचा दिया जाय क्योंकि उस के वहाँ रखने से ताज को खतरा है। क्या सरकार इस को इटावा पहुँचाने का इरादा रखती है ?

**SHRI H. N. BAHUGUNA:** That question does not arise but there is a lot of public debate and fear in the minds of the people about this particular question. Therefore may I inform the hon. Member that the report of the Expert Committee on Environmental Impact of Mathura Refinery was received a few days ago and it is being examined. As soon as we come to a conclusion on that we will come to the House and inform the House and we may assure the House that we will see that nothing hampers or mars of jeopardises Taj in any manner.

**PROF. P. G. MAVALANKAR:** I entirely agree with the hon. Minister that this question has to be looked at the national interest; the location may be Gujarat, Assam or anywhere. In view of the fact that around Gujarat, Cambay, etc., and also in Bombay High the latest findings are that oil is coming in abundance and will be so available for many years to come, there will be need for a refinery in Gujarat or near about Gujarat. In view of this may I ask him whether proposals for an additional refinery as well as petro-chemical complex are being discussed here by the officials of the Gujarat Government? They came to Delhi on the same aircraft with me yesterday for a discussion with the Planning Commission of the Gujarat plan. Are these proposals being actively considered by this Ministry in consultation with the Planning Commission and the Gujarat Administration?

**SHRI H. N. BAHUGUNA:** The hon. Members has raised a question which is in two parts: one is whether the state government of Gujarat has

taken up any proposals regarding various types of industries connected with the Bombay High gas or petroleum. The second part is whether we are in touch with them or doing something about the whole thing. I may assure the hon. Member that we have constituted a working group for utilisation of the gas and oil from Bombay High and other regions. It is a bilateral group, that is, ministry of petroleum and chemicals, Government of India, Planning Commission and the Government of Gujarat, their representatives. The details about feasibility, possibility for future set up, etc., are being worked. The whole matter is under discussion and the working group is yet to come out with its final views about the whole matter.

**श्री उग्र सेन :** मैं माननीय मंत्री जी से स्पष्ट जानना चाहता हूँ—क्या मथुरा रिफाइनरी के बारे में उन के पास जो रिपोर्ट आई है उस में इटली की एक टैक्नोक्रेट कम्पनी और हिन्दुस्तान के एक प्रमुख वैज्ञानिक ने ऐसा लिखा है कि इस में सल्फर-ब्राक्साइड निकलता है जिस से ताज के सफेद और लाल पत्थरों पर प्रभाव पड़ेगा इस लिये इस को वहाँ से हटा देना चाहिये। क्या यह भी उस रिपोर्ट में शामिल है ?

**SHRI H. N. BAHUGUNA:** I am not willing to disclose the contents of the report except to say, as I have said earlier that this government will not let the interest of Taj suffer in any manner.

### 288 'ब्रांच' लाइनों का विस्तार

\* 495. डा० महावीरपक सिंह शास्त्री: क्या रेल मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या मंत्रालय ने 288 ब्रांच लाइनों के विस्तार के बारे में योजना आयोग

से रिपोर्टें मांगी है; और

(ख) यदि हां, तो इस बारे में क्या कार्यवाही की गई है ?

रेल मंत्री (प्रो० मधु दण्डवते) : (क) जी नहीं ।

(ख) प्रश्न नहीं उठता ।

डा० महादीपक सिंह शाक्य : अध्यक्ष महोदय, मैं मंत्री महोदय से जानना चाहता हूँ—इस पार्लियामेंट के प्रथम अधिवेशन से इन 288 ब्रांच लाइनों का मामला प्लानिंग कमीशन के पास चल रहा है—इस लिए प्लानिंग कमीशन से यह रिपोर्टें कब तक आ जायगी ?

प्रो० मधुदण्डवते : मूल प्रश्न में पूछा गया है कि इन 288 ब्रांच लाइनों के बारे में रेलवे मंत्रालय ने कोई रिपोर्ट मंगवाई है—मैंने उत्तर दिया है कि हम लोगों ने ऐसी रिपोर्ट नहीं मंगवाई है । लेकिन मैं आप का बतलाना चाहता हूँ कि प्लानिंग कमीशन के द्वारा जो स्टडी-ग्रुप मुकर्रर किया गया है, उस में रेलवे के डेवलपमेंट, कन्स्ट्रक्शन और नई लाइन्स से सम्बन्धित प्रश्नों के बारे में विचार चल रहा है । हमारी अपेक्षा है कि दिसम्बर महीने में उनकी अन्तरिम रिपोर्ट हम लोगों के पास आयेगी, उस से पता लग जायगा कि कितनी एलोकेशन रहेगी और हालत क्या रहेगी ।

लेकिन उन्होंने जो जिक्र किया है 208 लाइनों का, 288 नहीं, वे जो ब्रान्च लाइनें हैं ऐसी ब्रान्च लाइनों की डेफीनीशन 1969 में इस तरह से की गई है । एक तो जो लाइन किसी भी गेज की हो, वह मैन लाइन को जोड़ी जाती है या किसी प्रकार की नेरो गेज लाइन, जहां ट्रांशिपमेंट की जरूरत होती है उस को ब्रान्च लाइन समझा जाता है । ऐसी जो ब्रान्च लाइनें हैं इनमें हमें काफ़ी घाटा आ रहा है लेकिन वह एक अलग सवाल है ।

डा० महादीपक सिंह शाक्य : मंत्री महोदय ने 288 ब्रान्च लाइनों के बारे में अभी अपने स्टेटमेंट में कहा है कि ब्रान्च लाइनों को मैन लाइनों से मिलाने के बारे में विचार चल रहा है । एटा से टुण्डना ब्रान्च लाइन हमेशा से घाटे में चल रही है, और सन् 1971 से अब तक इस हाऊस में इस प्रश्न को लाया गया है, तो मैं माननीय मंत्री जी से जानना चाहूंगा कि क्या वे इस बात का आश्वासन देंगे कि उस लाइन को फर्रुखाबाद मैन ब्रान्च लाइन से मिला दिया जाएगा ?

प्रो० मधु दण्डवते : जैसा दूसरे प्रश्न के उत्तर में मैंने यह बताया था कि हम लोगों के सामने आर्थिक कठिनाई होने की वजह से, जो लाइनें हमारे हाथ में हैं चाहे न्यू लाइनें हों या कोई कन्वर्जन का काम हो, उस काम को पहले पूरा करेंगे और उस के बाद दूसरी लाइनों को लेने के बारे में विचार करेंगे ।

श्री राधमूर्ति : अध्यक्ष महोदय, भारतवर्ष में हजारों मील लम्बी मीटर गेज की लाइनें बिछी हुई हैं और लाखों पैसेन्जर्स रोज एक स्थान से दूसरी स्थान पर जाते हैं और हजारों टन माल उन से पहुंचाया जाता है । मेरा एक स्पेसिफिक प्रश्न यह है कि बजाए योजना पर लाखों रुपये का खर्च करने के, इस धन को, रोड डेवलपमेंट और ग्रामी क्षेत्रों के विकास पर क्यों नहीं लगाया जाता और मीटर गेज से ब्राड गेज में बदलने का काम क्यों नहीं बन्द किया जाता ।

प्रो० मधु दण्डवते : मान्यवर, एक तरफ़ तो पिछड़े हुए हल्कों में नई रेलवे लाइनों को बनाने के लिए कहा जाता है और उन की मांग की जाती है और दूसरी तरफ़ यह कहा जाता है कि जब इस तरह की लाइनों पर घाटा होता है, तो ऐसी स्कीमों को रद्द किया जाय और उस पैसे को रोड और

रूरल डेवलपमेंट पर खर्च किया जाए और उन पर ज्यादा ध्यान दिया जाए। इन दोनों विचारों को ध्यान में रख कर हम फैसला लेंगे।

**श्री श्रीम प्रकाश त्यागी :** नई लाइनों के बिछाने या ट्रान्च लाइनों को मैन लाइनों से जोड़ने के लिए आप ने कौन सा क्राइटीरिया निश्चय किया है जिस की बेसिस पर आप यह निश्चय करते हैं कि यहां नई लाइन बननी चाहिए या केवल घाटे का प्रश्न ही आपके सामने है। कोई और क्राइटीरिया भी आप ने बना रखा है ?

**श्री० मधु बण्डवते :** अगर रेलवे लाइन पिछड़े हल्कों में बननी हैं तो वहां कम से कम ट्रैफिक की अच्छी डेसिटी तो होनी चाहिए। यातायात की सुविधाएं बढ़ाने के लिए और ज्यादा लाइनें बिछाने के लिए तभी विचार किया जा सकता है जब रिटन ज्यादा मिल सकत हो। मैं माननीय सदस्य की जानकारी के लिए बताना चाहता हूं कि 1972-73 से 1975-76 तक हमारी कितनी ब्रान्च लाइनें थीं और उन पर कितना घाटा हुआ है :—

सन	ब्रान्च लाइनें	घाटा करोड़ रुपये
1972-73	127	11.39
1973-74	139	19.90
1974-75	142	26.14
1975-76	132	25.75

इन सब बातों को ध्यान में रख कर हम कोई फैसला लेंगे।

**SHRI R. V. SWAMINATHAN:** Before opening more branch lines, will the minister tell us how many accidents are taking place per day on the railways and whether he will try to minimise the accidents?

**MR. SPEAKER:** How does it arise out of this?

**PROF. MADHU DANDAVATE:** I would reply to it on an appropriate occasion when there is a question on railways.

**MR. SPEAKER:** The Question Hour is over.

**SOME HON. MEMBERS:** Still there are two minutes.

**SHRI D. B. CHANDRE GOWDA:** The next question can be taken up.

**MR. SPEAKER:** No, there is no time for answering it.

#### WRITTEN ANSWERS TO QUESTIONS

##### Production of Industrial Alcohol

\*496. **SHRI D. B. CHANDRE GOWDA:** Will the Minister of PETROLEUM AND CHEMICALS AND FERTILIZERS be pleased to state:

(a) what is the annual production of industrial alcohol in the country and what are the names of the companies/States who are its major producers;

(b) what are the names of the industries which are its main consumers; and

(c) what steps are being taken to increase production of industrial alcohol in the country?